NJESR/Volume-1/Issue-11/November 2019 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2019.1.11.1-4

उपन्यास – 'तितली' किसान आन्दोलन में स्त्रियों की भूमिका

किरण देवी
सहायक प्राध्यापिका(तदर्थ),श्री लाल नाथ हिंदू महाविद्यालय, रोहतक

(Received 1 November 2019/Revised 15 November 2019/Accepted 25 November 2019/Published 30November 2019)

सारांश
स्वतंत्रतापूर्व भारत की लगभग तीन चौथाई आबादी कृषि कार्य में संलग्न थी और आज लगभग 53 प्रतिशत संलग्न है। आज देश की सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का लगभग 17 प्रतिशत योगदान है। कृषि प्रधान देश होने के कारण भारत की अर्थव्यवस्था को ऊँचे स्तर पर ले जाने का कार्य किसान निरन्तर करता आ रहा है। फिर भी, ब्रिटिश शासनकाल से ही उसकी आर्थिक स्थिति दयनीय बनी हुई है। 1920 के दशक में जब ट्रेड यूनियन और किसान आंदोलन खड़े हुए, तो अक्सर स्त्रियाँ उनकी पहली पंक्तियों में दिखाई दीं। इसीलिए, उपन्यासकार ने 'तितली' उपन्यास में किसानों की समस्याओं का समाधान तितली की प्रेरणा और शैला की तत्परता के माध्यम से उद्घाटित किया है। रचनाकार भ्रष्ट व अत्याचारी सामन्तवादी एवं साम्राज्यवादी व्यवस्था के विरुद्ध किसानों को जागरूक, सुशिक्षित और संगठित करके जुल्म के विरोध में प्रतिकार करने की शक्ति प्रदान करता है। और, यह शक्ति मुख्यतः तितली को प्रदान करता है। वर्तमान समय में, किसानों की समस्याओं को देखते हुए यह उपन्यास अपनी प्रासंगिकता को बनाए हुए है। 'तितली' उपन्यास समकालीन किसान समाज को नवचेतना प्रदान करते हुए आधुनिक दिशा की ओर ले जाता है।

मूल शब्द: कृषि, सकल घरेलू उत्पाद, अर्थव्यवस्था, किसान आंदोलन, जमींदारी व्यवस्था, सामन्तवादी एवं साम्राज्यवादी व्यवस्था, भू–राजस्व व्यवस्था।

प्रस्तावना

दुनिया की लगभग आधी आबादी कृषि द्वारा अपना जीवन यापन कर रही है। भारत कृषि प्रधान देश है। देश आजाद होने से पूर्व भारत की लगभग तीन चौथाई आबादी कृषि कार्य में संलग्न थी और आज लगभग 53 प्रतिशत संलग्न है। आज देश की सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का लगभग 17 प्रतिशत योगदान है। कृषि प्रधान देश होने के कारण भारत की अर्थव्यवस्था को ऊँचे स्तर पर ले जाने का कार्य किसान निरन्तर करता आ रहा है। फिर भी, ब्रिटिश शासनकाल से ही उसकी आर्थिक स्थिति दयनीय बनी हुई है। ब्रिटिश सरकार ने कृषि के आर्थिक सुधारों पर अधिक ध्यान न देकर भू–राजस्व पर अधिक ध्यान दिया। जिसके फलस्वरूप भू–राजस्व की रकम प्रति वर्ष बढ़ती गई। सरकार ने अपनी सारी आय ब्रिटिश व्यापार, उद्योग के हितों को साधने, भारत के प्रशासन की आवश्यकताओं को पूरा करने में लगा दी। कृषि क्षेत्र में सरकार के प्रयास से किसानों को कोई विशेष आर्थिक लाभ नहीं मिला। भू–राजस्व व्यवस्था ने ज़मीन को हस्तांतरण योग्य बनाकर महाजन को ज़मीन हथियाने में समर्थ बना दिया। 'अधिकाधिक ज़मीन महाजनों, सौदागरों, धनी किसानों और अन्य धनी वर्गों के हाथों में चली गई। यही प्रक्रिया जमींदारी क्षेत्रों में भी हुई, जहाँ किसान अपने काश्तकारी अधिकार खो बैठे और इन्हें ज़मीन से बेदखल कर दिया गया।' [1] साथ ही एक गंभीर समस्या और भी थी– नील के खेतों में काम करनेवाले किसानों पर अंग्रेज व्यापारी बहुत अधिक अत्याचार करते थे। इस तरह, विशेषरूप से निर्धन किसान वर्ग को सरकार, जमींदार, महाजन, अंग्रेज व्यापारी, धनी किसान व अन्य धनी वर्ग के बोझ ने कुचल डाला। इस बोझ से कुचलने की गवाही जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'तितली' उपन्यास (सन् 1934 में प्रकाशित) में साक्षात् मिलती है।

प्रस्तुत उपन्यास में किसान आंदोलनों में स्त्रियों की भूमिका का प्रभाव विशेष रूप से दिखाई देता है। '1920 के दशक में जब ट्रेड यूनियन और किसान आंदोलन खड़े हुए, तो अक्सर स्त्रियाँ उनकी पहली पंक्तियों में दिखाई देतीं। भारतीय स्त्रियों की जागृति तथा मुक्ति में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी भागीदारी का रहा। कारण, यह कि जिन्होंने ब्रिटिश जेलों तथा गोलियों को झेला था उन्हें ही भला कौन क्या कह सकता था। और उन्हें अब और कब तक घरों में कैद रखकर ''गुड़िया'' या ''दासी'' के जीवन से बहलाया जा सकता था? मनुष्य के रूप में अपने अधिकारों का दावा उन्हें करना ही करना था।' [2] इसीलिए, जयशंकर प्रसाद ने किसानों की समस्याओं का समाधान तितली की प्रेरणा और शैला की तत्परता के माध्यम से उद्घाटित किया है। वे, तितली और शैला तत्परता को रेखांकित करते हुए कहते हैं कि ''शैला की तत्परता से धामपुर का ग्राम–संघटन अच्छी तरह हो गया था। इन्हीं कई वर्शों में धामपुर एक कृषि–प्रधान छोटा–सा नगर बन गया।... पाठशाला, बैंक और चिकित्सालय तो थे ही, तितली की प्रेरणा से दो–एक रात्रि पाठशालाएँ भी खुल गयी थीं। कृशकों के लिए कथा के द्वारा शिक्षा का भी प्रबन्ध हो रहा था।... और तितली? उसके और खेत बनजरिया से मिल जाने पर बीसों बीघे का एक चक हो गया था।'' [3] कार्ल मार्क्स ने स्वीकार किया है कि कोई भी इतिहास के बारे में जानता है तो वह जानता है कि महान सामाजिक परिवर्तन स्त्री–उत्थान के बिना असंभव हैं। [4] उपन्यास में एक ओर महँगाई, कृषि के मूल साधनों का अभाव, कर्ज या ऋण, आदि समस्याओं से जूझते किसानों के त्रासदी भरे मार्मिक दृश्य सामने आते हैं, तो दूसरी ओर किसानों में आत्मसम्मान के लिए मर मिटने की आकांक्षा, कर्त्तव्यनिष्ठ होकर स्वयं अपनी समस्याओं को हल करने के दृश्य, साथ ही गाँवों में पाठशाला, चिकित्सालय और बैंक के प्रति शासन–प्रशासन के टूटे मन से किए गए सुधारात्मक दृश्य भी मिलते हैं। उक्त सुधारों का कारण यह भी रहा है कि सन् 1897 में गोपालकृष्ण गोखले ने ब्रिटिश सरकार से ग्रामीण जनता में शिक्षा–प्रसार, कृषि बैंकों, सिंचाई–योजनाएँ, चिकित्सा आदि समस्याओं हेतु सुधार करने की मांगें उठाईं। इतिहासकार विपिनचन्द्र ने उल्लेख किया है कि गोखले ने ''जनता में प्राथमिक शिक्षा के प्रसार पर बहुत अधिक जोर दिया।. सूदखोरों के चुंगल से किसानों को बचाने के लिए उन्होंने कृषि बैंकों की स्थापना की मांग की। वे चाहते थे कि सरकार खेती के विकास तथा देश को अकाल से बचाने के लिए बड़े पैमाने पर सिचांई की योजनाएँ लागू करे। उन्होंने चिकित्सा तथा स्वास्थ्य सुविधाओं को बढ़ाने तथा पुलिस को ईमानदार, कुशल तथा जनप्रिय बनाने के लिए पुलिस व्यवस्था में सुधार की मांगें भी उठाईं।'' [5] परतंत्र देश में भारतीय नेताओं ने ब्रिटिश सरकार से

Created by Universal Document Converter

किसानों के हित में काफी मांगें उठाईं और संघर्ष भी किए। लेकिन, बावजूद इसके, किसानों के हित में सरकार का रवैया कोई खास नहीं रहा। अंग्रेज व्यापारियों, जमींदारों, महाजनों व अन्य धनी वर्गों ने किसानों का खुलकर शोषण किया।

उपन्यास के प्रारम्भ में महँगाई से जूझते किसानों के मार्मिक दृश्य सामने आते हैं, जो सन् 1915 के आसपास के समय से अवगत कराते हैं। इस सन्दर्भ में, उपन्यासकार ने अपनी नौ वर्ष की आयु के अकाल–समय (सन् 1898) की महँगाई की, सन् 1915 के आसपास–समय से तुलना, अंधेरे में चिथड़ों से लिपटे हुए किसान रामनाथ के कथन के माध्यम से की है। रामनाथ बंजो से कहता है– "वही संवत्, 55 का अकाल आज के सुकाल से भी सदय था, कोमल था। तब भी आठ सेर का अन्न बिकता था। आज पाँच सेर की बिक्री में भी कहीं जूँ नहीं रेंगती, जैसे सब धीरे–धीरे दम तोड़ रहे हैं!" [6] इतिहास से विदित होता है कि सन् 1896–97 और फिर 1899–1900 में सूखे के कारण देशव्यापी अकाल पड़ा, जिससे व्यापक तबाही हुई। फिर भी, इतनी महँगाई नहीं थी; जितनी सन् 1915 के आसपास की। कारण यह भी रहा है कि यह काल प्रथम विश्वयुद्ध का रहा है, लेकिन विश्वयुद्ध की चर्चा उपन्यास में नहीं है। उस समय सरकार द्वारा महँगाई को कम करने का कोई प्रयास नहीं किया गया। जिसके परिणामस्वरूप उपन्यास में किसानों का जीवन त्रासदी भरा सामने आता है। किसानों के लिए कृषि संसाधनों की आवश्यकता ऑक्सीजन के समान है। उपन्यास में किसानों के पास खेती करने हेतु मूल साधनों की कमी दिखाई गई है। बहुसंख्यक किसानों की दरिद्रता का कारण, उनके पास मूल संसाधनों का न होना है, जो उनकी जमीनी स्तर की समस्याओं को दर्शाता है। किसी के पास हल है, तो किसी के पास बैल। हल का जिक्र करती हुई बंजो मधुबन से कहती है : "तब क्या करोगे मधुबन! अभी एक पानी चाहिए। तुम्हारा आलू सारोकार ऐसा ही रह जाएगा? ढाई रुपये के बिना! महँगू महतो उधार हल नहीं देंगे? मटर भी सूख जायेगी!... अभी एक कम्बल लेना जरूरी है।" [7] जहाँ कृषि करने के लिए मूल साधनों का अभाव दिखाया गया है, वहीं दैनिक जीवन में अनिवार्य रूप से उपयोग में होने वाली चीजों की कमी भी दर्शायी गई है। उपन्यासकार ने जमींदारों के द्वारा किसानों की बेटियों के साथ हो रहे घिनौने कृत्यों को बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। मलिया जमींदार की छावनी में काम करती है। माधुरी का पति श्यामलाल अपनी ससुराल आता है। मलिया किसी काम से श्यामलाल के पास जाती है, तो वह उससे छेड़छाड़ करता है। मलिया के विरोध करने पर उसको डाटता है, "हरामजादी, झूठमूझ चिल्लाती है। सारा पान भी गिरा दिया और... ।" [8] खास बात यह है कि श्यामलाल का साथ एक औरत मिस अनबरी देती है। एक नारी, दूसरी नारी का शारीरिक शोषण करवाना चाहती है। देश की ऐसी कालिमा किसी विदेशी द्वारा न होकर अपितु अपने देश के लोगों के द्वारा ही देखने को मिलती है। मलिया का चाचा भी मर जाता है। वह अनाथ हो जाती है। इस तरह की समस्या अकेली मलिया ही सामना नहीं करती, बल्कि न जाने कितनी मलिया जमींदारों की हवेलियों में अपनी इज्जत को बचाए रखने के लिए सदैव जूझती रहती हैं। प्रसाद जी ने किसानों की बेटियों के विवाह–समस्या को भी संवेदनापूर्ण व्यक्त किया है। इन्द्रदेव और शैला के एक–साथ रहने से श्यामदुलारी, माधुरी, तहसीलदार, मिस अनवरी, सुखदेव चौबे परेशान रहते हैं। कारण, यदि इन्द्रदेव ने शैला से विवाह कर लिया तो सबकुछ हाथ से निकल जाएगा। इसलिए, वे लोग तितली का विवाह इन्द्रदेव से कराना चाहते हैं और इसके बदले में शेरकोट, बनजरिया की भूमि इत्यादि समस्याओं से संबंधित किसानों को छुटकारा देना चाहते हैं। उन लोगों में महँगू महतो भी शामिल रहता है जो एक धनी किसान है। सभी मिलकर एक किसान की बेटी के जीवन की बलि देना चाहते हैं। लेकिन रामनाथ तितली का विवाह मधुबन से कराना चाहता है। मधुबन और तितली के विवाह पर बहुत अड़चने पैदा की जाती हैं; लेकिन शैला इस मसले को विवेकपूर्वक सुलझाती है। वह मधुबन से कहती है, "क्यों मधुबन तुम पूरी तरह से विचार करके यह ब्याह कर रहे हो न? इसमें तुम प्रसन्न हो?/सम्पूर्ण चेतनता से मधुबन ने कहा– हाँ।/और तुम तितली?/मैं भी।" [9] शैला और रामनाथ सभी के शत्रु बनकर तितली का विवाह मधुबन से करा देते हैं। शैला के माध्यम से उपन्यासकार ने समाज में नारी जागरुकता को स्पष्ट किया है। साथ ही युवा चेतना को नये जोश के साथ अभिव्यक्त किया है। श्यामलाल के आने की खुशी में तहसीलदार मेले का आयोजन करता है और नाच–गाने के लिए एक वैश्या 'मैना' को बुलाता है; इसके अतिरिक्त मेले में दंगल का आयोजन भी करता है। रामजस मधुबन से कुश्ती लड़ने के लिए जिद करता है तो मधुबन उससे कहता है, "मधुबन अब कुश्ती नहीं लड़ सकता रामजस! अब उसे अपनी रोटी–दाल से लड़ना है।" [10] रोटी–दाल से किसान की लड़ाई को व्यंजना शैली में अभिव्यक्त किया गया है।

गाँव में चिकित्सालय संबंधी समस्याएँ यथार्थ रूप में सामने आती हैं। इतिहास से पता चलता है कि ब्रिटिश सरकार का गाँवों में चिकित्सालय बनाने की ओर ध्यान रहा; लेकिन सुविधाएँ अधिकाँश फाइलों में ही रहीं। शेरकोट में खुले हुए नये चिकित्सालय में किसान अपनी–अपनी बीमारी की दवा लेने आते हैं। डॉक्टर का कार्य शैला करती है। रामजस के साथ उसका भाई दवा लेने के लिए आता है, उसकी ठुड्ढी काँप रही थी। गले के समीप कुर्ता फटकर लटक रहा है। शैला उसे देखते ही कहती है, "रामजस! मैंने तुमको मना किया था। इसे यहाँ क्यों ले आये? खाने के लिए सागूदाना छोड़कर और कुछ न देना! ठंड बचाना!/मेम साहब, रात को ऐसा पाला पड़ा कि सब मटर झुलस गई। हरी मटर शहर में बेचने के लिए ले जाते तो सागूदाना ले आते। अब तो इसी को भूनकर कच्चा–पक्का खाना पड़ेगा। वही इसे भी मिलेगा।/तब तो इसे तुम मार डालोगे!/मरना तो है ही! फिर क्या किया जाय?" [11] गाँव में चिकित्सालय तो खुला, लेकिन दवाईयाँ नहीं; समस्या वहीं की वहीं बनी रहती है।

भारतीय कृषि बहुत हद तक वर्शा पर निर्भर रहती है। वर्षा किसान के लिए अमृत के साथ–साथ, कभी–कभी विष भी बन जाती है; जिसके कारण नकदी फसलें नष्ट हो जाती हैं। किसानों द्वारा की गई आत्महत्याओं का मुख्य कारण 'यह' भी माना जाता रहा है। उपन्यासकार ने वर्षा के द्वारा फसल की हत्या का मानवीकरण अलंकार में रेखांकन किया है : "कच्चे कुएँ के जगत पर सिर पकड़े हुए एक किसान बैठा है। उसके सामने मरी हुई खेती का शव झुलसा पड़ा है। उसकी प्रसन्नता और साल भर की आशाओं पर वज्र की तरह पाला पड़ गया।" [12] मरी हुई खेती के झुलसे हुए शव का अंतिम संस्कार करने में भी किसान को धन और श्रम दोनों की आवश्यकता रहती है। किसानों के चारों ओर त्रासदी भरा कोहरा मंडराता दिखाई देता है। उपन्यासकार ने त्रासदी भरे कोहरे से लड़ते हुए किसान परिवार का चित्रण इस प्रकार किया है : "किसान व्याकुल हो उठे थे। तहसीलदार की कड़ाई और भी बढ़ गई थी। जिस दिन रामजस का भाई पथ्य के अभाव से मर गया और उसकी माँ भी पुत्रशोक में पागल हो रही थी, उसी दिन जमींदार की कुर्की पहुँची। पाला से जो कुछ बचा था, वह जमींदार के पेट में चला गया। खड़ी फसल कुर्क हो गई। महँगू भी इस ताक में बैठा था।... दूसरे ही दिन उसकी माँ भी चल बसी।" [13] उक्त घटनाएँ पाठक को व्यथित कर देती हैं। ऐसे तथ्य सामने आते हैं कि किस प्रकार जमींदारी व्यवस्था, प्रशासन और धनी किसान निर्धन किसानों का शोषण करते हैं। रामजस के पास कुछ नहीं बचता; फिर भी वह गाँव नहीं छोड़ता। वह उन किसानों की तरह नहीं है, जो प्रतिकार न

Created by Universal Document Converter

करें। वह राष्ट्रीय आंदोलनों से प्रभावित युवक है। उसके साथ न्याय न होने पर वह अपने खेत के पके हुए जौं को जला देता है। सुखदेव चौबे के विरोध करने पर कहता है कि ''यह खेत क्या तुम्हारे बाप का है? मैंने इसे छाती का हाड़ तोड़ कर जोता–बोया है; मेरा अन्न है, लुटा देता हूँ, तुम होते कौन हो?'' [14] सुखदेव चौबे से रामजस और मधुबन का झगड़ा हो जाता है। महँगू महतो और तहसीलदार, चौबे का साथ देते हैं। मधुबन और रामजस के खिलाफ मुकदमा दायर हो जाता है। समकालीन समय में भी यही स्थिति देखने को मिलती है। गाँव में निर्धन किसानों का कोई साथ नहीं देता। गाँव के परिवेश बदले हैं, मनोविकार नहीं। प्रसाद जी ने मधुबन और रामजस को एक क्रान्तिकारी किसान के रूप में प्रस्तुत किया है। सन् 1915–20 के आसपास का समय बहुत से क्रांतिकारियों का क्रांतियज्ञ काल रहा है, जिनमें युवकों और स्त्रियों की अहम् भूमिका रही। एक कारण यह भी रहा है कि रामनाथ एक आर्यसमाजी ब्राह्मण था; जिसका प्रभाव तितली, मधुबन, रामजस, शैला, इन्द्रदेव आदि पात्रों पर दर्शाया गया है। 'आर्यसमाजी सुधार के प्रखर समर्थक थे। स्त्रियों की दशा सुधारने तथा उनमें शिक्षा का प्रसार करने के लिए उन्होंने बहुत से काम किए। उन्होंने छुआछूत तथा वंश–परंपरा पर आधारित जाति–प्रथा की कठोरताओं का विरोध किया। वे सामाजिक समानता के प्रचारक थे तथा उन्होंने सामाजिक एकता को मजबूत बनाया। उन्होंने जनता में आत्मसम्मान तथा स्वावलंबन की भावना भी जगाई।' [15]

'गांधीजी ने सत्याग्रह का अपना पहला बड़ा प्रयोग बिहार के चंपारन ज़िले में 1917 में किया। यहाँ नील के खेतों में काम करने वाले किसानों पर यूरोपीय निलहे बहुत अत्याचार करते थे। किसानों को अपनी ज़मीन के कम से कम 3/20 भाग पर नील की खेती करना तथा निलहों द्वारा तय दामों पर उन्हें बेचना पड़ता था।' [16] उपन्यासकार ने निलहों के अत्याचार को यथार्थ के धरातल पर अभिव्यक्त किया है। भारत उपमहाद्वीप में आने वाले अंग्रेज सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और व्यावसायिक श्रेणियों के व्यक्ति थे। 'बर्नार्ड कोहन ने कहा है, 'बनारस–जैसी दूर जगह में भी एक अंग्रेज समाज नहीं, कई अंग्रेज समाज थे।... बागानों के मालिक अन्य व्यावसायी समूहों से कुछ भिन्न थे और अपने बागानों के पास अथवा उन नगरों में रहते थे जहाँ उनकी उपज (नील, सन, चाय) को पण्योपयोगी बनाया जाता था।' [17] उपन्यास में दिखाया गया है कि नील का काम बन्द होने के कारण किसानों ने नील बोना बन्द कर दिया, पर लगान का रुपया देना पड़ता था। अग्रेज व्यापारी 'बार्टली' की प्रताड़ना से देवनन्दन ब्राह्मण किसान की मौत हो जाती है और उसकी मौत पर बार्टली और महँगू महतो बहुत खुशी मनाते हैं। उपन्यास में बार्टली और देवनन्दन ब्राह्मण किसान की शत्रुता को स्पष्ट नहीं किया गया है। इतिहास से पता चलता है कि सन् '1910 से 1920 तक के दशक में भारत में अंग्रेजों के एक वर्ग ने ब्राह्मण को ही अपना चरम–शत्रु मान लिया। सबसे पहले तो 1910 में वैलेन्टाइन किरोल की पुस्तक 'भारतीय विक्षोभ' (इण्डियन अनरैस्ट) प्रकाशित हुई, जिसकी मुख्य स्थापना थी कि ब्राह्मणवाद और पश्चिमी शिक्षा से भारत में अंग्रेजी शासन को गम्भीर खतरा है।' [18] यही कारण रहा होगा, जिस कारण बार्टली ब्राह्मण वर्ग के किसानों से शत्रुता रखता है।

किसानों के जीवन में अनेक समस्याएँ अपना विनाशकारी मुहँ खोले आती दिखाई देती हैं। जिनमें एक कर्ज या ऋण की समस्या भी है। कर्ज या ऋण की व्याख्या सरकारी तंत्र अपने तरीके से करता रहा है। सरकार केवल बैंको, पंजीकृत सहकारी कृषि समितियों, आदि के ऋण को ही ऋण मानती है। जबकि, इसका दूसरा पहलु गाँव में महाजनों ओर सूदखोरों से लिया हुआ कर्ज है। गाँव के महाजन और सूदखोर के दुष्चक्र में फँसे कृषकों की समस्या विकराल है। अधिकतर छोटे किसान बीज, खाद और जरूरतों के लिए उन पर निर्भर रहते हैं। इसलिए, वे उनकी जमीन को छीनकर उन्हें भूमिहीन बना देते हैं। प्रसाद जी ने उपन्यास में एक ऐसे ही महंत की स्थिति को चित्रित किया है। धामपुर के बाज़ार में बिहारीजी के मन्दिर में एक महंत रहता है। जब किसानों को कोई आर्थिक समस्या आती, तो वे अपने खेत उसके यहाँ बन्धक रख देते। इसी तरह छोटी–छोटी आसपास की जमींदारी भी उसके हाथ आ गई। महंतों को नई कानून राजस्व नीति से भी बहुत मदद मिली। किसानों के हाथों से ज़मीन निकल जाने की प्रक्रिया अभाव के समय होती और जब भी फसल खराब होती, तो वह महंत का आश्रय लेता था। प्रशासन महंत लोगों से मिला रहता था। मधुबन, रामजस और सुखदेव के झगड़े के सन्दर्भ में ठाकुर रामपाल इंस्पेक्टर महंत से कहता है, ''यह मुकदमा अच्छी तरह न चलाया गया, तो यहाँ के किसान फिर आप लोगों को अँगूठा दिखा देंगे। एक पैसा भी उनसे आप ले सकेंगे, इसमें सन्देह है। सुना है कि आपका रुपया भी बहुत–सा इस देहात में लगा है।'' [19] प्रशासन और महंतों का यह गठजोड़ किसानों का शोषण करने के लिए होता था। राजकुमारी महंत के पास रुपया माँगने आती है, कहती है : ''शेरकोट को बन्धक रखकर मेरे भाई मधुबन को कुछ रुपये दीजिए। तहसीलदार ने बड़ी धूमधाम से मुकदमा चलाया है।... इस समय आप न उबारेंगे, तो हमारा दस प्राणियों का परिवार नष्ट हो जायगा। घर की स्त्रियाँ रात को साग खोंट कर ले आती हैं। वही उबाल कर नमक से खाकर सो रहती हैं। दूसरे–दूसरे दिन अन्न कभी–कभी, वह भी थोड़ा–सा मुहँ में चला जाता है।'' [20] ऐसे संवेदनापूर्ण दृश्य से स्पश्ट होता है कि प्रसाद जी ने पैनी नज़र से किसानों की पारिवारिक स्थिति को चित्रित किया है। और यह भी चित्रित किया है कि धन की समस्या के वक्त किसानों की स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। कामुक महंत राजकुमारी का शारीरिक शोषण करना चाहता है, लेकिन मधुबन के आ जाने से असफल रहता है।

एक तरफ किसान महाजनों, सूदखोरों से लिए हुए कर्ज से ग्रस्त रहते हैं, तो दूसरी ओर लगान की समस्या से भी घिरे रहते हैं। राजकुमारी तितली से बताती है कि यदि कल लगान का रुपया जमा न हुआ, तो तेरी बनजरिया भी जमींदार के पास चली जाएगी। यह सुनकर तितली अपना कड़ा, अँगूठी–छल्ला राजकुमारी के सामने रख देती है और कहती है, ''इसको बेचकर रुपये लाओ जीजी। लगान का रुपया देकर जो बचे उससे एक दालान यहीं बनवाना होगा। मैं यहाँ पर कन्या–पाठशाला चलाऊँगी। और खेती के समान में जो कुछ कमी हो, उसे पूरा करना होगा। गायें बेच दो। आवश्यकता हो तो बैल खरीद लेना। तुम देखो खेती का काम और मैं पढ़ाई करूँगी।'' [21] तितली के चरित्र में 'कामायनी' महाकाव्य की श्रद्धा एवं इड़ा दोनों ही समायी हुई हैं। प्रसाद जी ने तितली को 'वास्तव में महीयसी और गरिमामयी भारतीय नारी' के रूप में चित्रित किया है।

भारतीय ग्रामीण जीवन में किसानों की अनेक समस्याओं के समाधानों में चकबन्दी एक समाधान के रूप में है। लेकिन चकबन्दी किसानों के जीवन में एक समस्या बनकर सामने आती है; जिसका कारण प्रशासन, जमींदार, धनी किसानों की मनमानी इच्छाएँ होती हैं। चकबन्दी के समय धनी किसान प्रशासन से मिले रहते हैं और निर्धन किसान अपने नियति से। लेकिन उपन्यासकार ने तितली के माध्यम से नियति से आमना–सामना किया है। तितली वाट्सन से ओज भरी वाणी में कहती है, ''मेरा कुछ खेत महँगू जोत रहे हैं। मैं नहीं जानती कि मेरे पति ने वह खेत किन शर्तों पर उन्हें दिया है। किन्तु मुझे आवश्यकता है अपने स्कूल के लिए और भी विस्तृत भूमि की। बनजरिया पर लगान तो लग ही गया है। उसमें लड़कियों के खेलने की जगह बनाने से मेरी खेती की भूमि कम हो गई है। मैं चाहती हूँ महँगू के पास जो मेरा खेत है, वह महँगू को दे दिया जाय और

Created by Universal Document Converter

बनजरिया से सटा हुआ रामजस का खेत मुझे बदले में दिला दिया जाय।'' [22] प्रसाद ने तितली के चरित्र का ज्ञान एवं कर्म दोनों ही पंखों से निर्माण किया है। तितली आत्म–मंगल ही नहीं करती, बल्कि अनाथ लड़कियों की सहायता भी करती है। तितली के पास तीन छोटी–छोटी अनाथ लड़कियाँ रहती हैं? उनके बारे में, जब शैला उससे पूछती है; तो वह बताती है कि : ''समाज की निर्दय महत्ता के काल्पनिक दम्भ का निदर्शन! छिपाकर उत्पन्न किये जाने योग्य सृष्टि के बहुमूल्य प्राणी, जिन्हें उनकी माताएँ भी छूने में पाप समझती हैं! व्यभिचार की संतान!'' [23] तितली के पुरुषार्थ से वाट्सन, इन्द्रदेव और शैला प्रभावित दिखाए गए हैं। तितली से प्रभावित होकर तीनों उसको आर्थिक सहायता देना चाहते हैं, लेकिन वह उनकी सहायता लेने से मना कर देती है। वह कहती है : ''मैं दो आने महीना लड़कियों से पाती हूँ। और उतने से पाठशाला का काम अच्छी तरह चलता है। कुछ मुझें बच भी जाता है। जमींदार ने मेरी पुरखों की डीह ले ली। मुझे माफी पर भी लगान देना पड़ रहा है। और मुझे इस विपत्ति में डालने वाले हैं यहाँ के जमींदार और तहसीलदार साहब! तब भी आप लोग कहते हैं कि मैं उन्हीं लोगों से सहायता लूँ!'' [24] '1920 के दशक तक प्रबुद्ध पुरुषगण स्त्रियों के कल्याण के लिए कार्यरत रहे। अब आत्मचेतन तथा आत्मविश्वास प्राप्त स्त्रियों ने यह काम संभाला। इस उद्देष्य से उन्होंने अनेक संस्थाओं और संगठनों को खड़ा किया। इनमें सबसे प्रमुख था आल इण्डिया विमेन्स कांफ्रेंस जो 1927 में स्थापित हुआ।' [25] 'कामायनी' महाकाव्य के 'इड़ा' सर्ग की ये पंक्तियाँ तितली के जीवन को सरोकार करती हैं : 'मैं स्वयं सतत आराध्य आत्म–मंगल–उपासना में विभोर/उल्लासशील मैं शक्ति–केंन्द्र, किसकी खोजूँ फिर शरण और।' उपन्यासकार ने तितली से प्रभावित इन्द्रदेव के द्वारा गाँव की समस्याओं का समाधान करते दिखाया है। लेकिन, ग्राम–सुधार मसले पर इन्द्रदेव को हार का सामना करना पड़ा। जमींदारी–व्यवस्था से हार मानकर इन्द्रदेव व्यक्तिगत रूप से अपने हिस्से की सम्पत्ति को ग्राम–सुधार करने के लिए लिख देता है और उसका इंचार्ज शैला को बना देता है। आलोचक आशिक बालौत ने उपन्यास के सन्दर्भ में ठीक ही लिखा है कि ''प्रसाद इस उपन्यास में किसानों की मुक्ति के लिए न केवल चिन्तित दिखाई देते हैं, बल्कि भ्रष्ट और दमनकारी सामन्तवादी एवं साम्राज्यवादी व्यवस्था के विरुद्ध उन्हें जागरूक, सुशिक्षित और संगठित करके जुल्म के विरोध में प्रतिकार करने की शक्ति प्रदान करते हैं।'' [26] और, यह शक्ति मुख्यतः तितली को प्रदान करते हैं; जिससे प्रेरित होकर शैला, इन्द्रदेव और वाटसन जैसे पात्र किसानों की मुक्ति और ग्राम–सुधार के लिए सामने आते हैं। उपन्यास में किसान–जीवन के सामाजिक परिवेश की जीती जागती दुनिया से गुजरते हैं; जिसका रचनात्मक महत्त्व होने के साथ–साथ ऐतिहासिक महत्त्व भी है। 'कामायनी' महाकाव्य के 'श्रद्धा' सर्ग की पंक्ति 'दुःख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात' इस उपन्यास में अपने आप को सार्थक सिद्ध करती है।

सन्दर्भ सूची

1. विपिन चन्द्र, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्रा.लि. हैदराबाद, संस्करण : 2018, पृ.178
2. वही, पृ.234
3. जयशंकर प्रसाद, तितली, प्रसाद प्रकाशन, वाराणसी, 1975, पृ.249
4. Anyone who knows anything of history knows that great social changes are impossible without feminine upheaval. (www.azquotes.com)
5. विपिन चन्द्र, आधुनिक भारत का इतिहास, पृ. 208–209
6. तितली, पृ.15
7. वही, पृ.38
8. वही, पृ.127
9. वही, पृ.119
10. वही, पृ.135
11. वही, पृ.138
12. वही, पृ.139
13. वही, पृ.160
14. वही, पृ.169
15. विपिन चन्द्र, आधुनिक भारत का इतिहास, पृ.221
16. वही, पृ.280
17. एम. एन. श्रीनिवास : आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 15वाँ संस्करण : 2016, पृ. 61
18. वही, पृ.9
19. तितली, पृ.172
20. वही, पृ.172–173
21. वही, पृ.206
22. वही, पृ.221
23. वही, पृ.224
24. वही, पृ.226
25. विपिन चन्द्र, आधुनिक भारत का इतिहास, पृ.234
26. कुंवरपाल सिंह एवं अजय बिसारिया सं., हिन्दी उपन्यास जनवादी परम्परा : नवचेतन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण : 2003, पृ.82

Created by Universal Document Converter